



## फास्ट ट्रैक वशेष न्यायालय

### प्रलिस के लयः

फास्ट ट्रैक वशेष न्यायालय, यून अपराधों से बच्चों का संरक्षण अधनियम (POCSO अधनियम), यून अपराध, [आपराधक कानून \(संशोधन\) अधनियम, 2018](#)

### मेन्स के लयः

फास्ट ट्रैक वशेष न्यायालय, केंद्र और राज्यों द्वारा जनसंख्या के कमजोर वर्गों के लय कल्याणकारी योजनाएँ और इन योजनाओं का प्रदर्शन ।

[स्रोत: पी.आई.बी.](#)

## चर्चा में क्यों

हाल ही में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने तीन वर्षों (वर्ष 2026 तक) के लय फास्ट ट्रैक वशेष न्यायालय (FTSCs) को जारी रखने की मंजूरी दे दी है ।

- प्रारंभ में अक्टूबर 2019 में एक वर्ष के लय शुरू की गई इस योजना को **मार्च 2023 तक अतरिकित दो वर्षों के लय बढ़ा दिया** गया था ।

## फास्ट ट्रैक वशेष न्यायालय (FTSCs) क्या है?

### परचयः

- FTSCs भारत में स्थापति वशेष न्यायालय हैं जनिका प्राथमक उद्देश्य यून अपराधों से संबंधति मामलों की सुनवाई प्रक्रया में तेज़ी लाना है, वशेष रूप से [यून अपराधों से बच्चों के संरक्षण अधनियम \(POCSO अधनियम\)](#) के तहत **बलात्कार और उल्लंघन से जुड़े मामलों की सुनवाई में तेज़ी लाना है** ।
- FTSCs की स्थापना सरकार द्वारा यून अपराधों की चतिजनक आवृत्त और नयिमति न्यायालयों में लंबति मुकदमों की लंबी अवधि के चलते की गई, जसिके परणामस्वरूप पीड़ितों को न्याय प्राप्ति में देरी हुई ।

### स्थापनाः

- केंद्र सरकार ने वर्ष 2018 में **दंड वधि (संशोधन) अधनियम** लागू कया, जसिमें बलात्कार अपराधियों के लय मृत्युदंड सहति कठोर दंड के प्रावधान कयि गए ।
- इसके बाद ऐसे मामलों में त्वरति न्याय सुनिश्चति करने के लय FTSC की स्थापना की गई ।

### केंद्र प्रायोजति योजनाः

- FTSC स्थापति करने की योजना **अगस्त 2019** में एक **केंद्र प्रायोजति योजना** के रूप में भारत के **सर्वोच्च न्यायालय** के स्वतः संज्ञान रटि याचिका (आपराधक) में नरिदेशों के बाद तैयार की गई थी ।

### अब तक की उपलब्धियाँः

- तीस राज्यों/केंद्रशासति प्रदेशों ने इस योजना में भाग लया है तथा 414 वशिष्ट POCSSO न्यायालयों सहति 761 FTSC का संचालन कया गया है, जनिहोंने 1,95,000 से अधिक मामलों का समाधान कया है ।
- ये न्यायालय यून अपराधों के पीड़ितों को समय पर न्याय प्रदान करने के राज्य/केंद्रशासति प्रदेश सरकार के प्रयासों का समर्थन करते हैं । यहाँ तक कि दूरवर्ती इलाकों में भी ।

## फास्ट ट्रैक वशेष न्यायालय से संबंधति चुनौतियाँ क्या हैं?

### अपर्याप्त बुनयािदी ढाँचा तथा कम नपिटान दरः

- भारत में वशेष न्यायालय अक्सर नयिमति न्यायालयों की तरह ही चुनौतियों से जूझते हैं, क्योंकि उन्हें आमतौर पर नए बुनयािदी ढाँचे के रूप में स्थापति करने के बजाय नामति कया जाता है ।
- इससे न्यायाधीशों पर अत्यधिक बोझ पड़ता है, जनिहें **आवश्यक सहायक कर्मचारियों** अथवा बुनयािदी ढाँचे के बिना उनके मौजूदा कार्यभार

के अलावा अन्य श्रेणियों के मामले भी सौंप दिया जाता है।

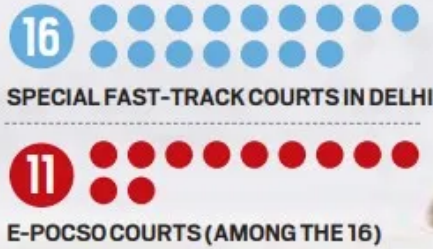
- परिणामस्वरूप इन विशेष न्यायालयों में मामलों के नपिटारे की दर धीमी हो जाती है।
- प्रति न्यायालय प्रतिवर्ष लगभग 165 POCSO मामलों के नपिटान के अनुमानति लक्ष्य की प्राप्ति में भी काफी कमी है, देश में 1,000 से अधिक FTSCs में से वर्तमान में प्रत्येक की औसतन वार्षिक तौर पर केवल 28 मामलों को नपिटान किया जा रहा है।

## A COMPARISON

State/UT	Total Cases	Cases disposed (cumulative)	Cases pending (cumulative)	Disposal rate (in percentage)
Delhi	5,418	1,049	4,369	19
Uttar Pradesh	1,24,778	44,988	79,790	36
Tamil Nadu	10,214	5,178	5,036	50
Bihar	23,546	7,533	16,013	32
Gujarat	14,772	8,245	6,527	55
Maharashtra	20,143	14,326	5,817	67
Jammu & Kashmir	566	126	440	22
Kerala	19,797	12,870	6,927	65
Mizoram	188	125	63	66

-Figures from inception of the scheme in 2019 till May 2023

-Data from an answer to a question in the Rajya Sabha, July 27, 2023



### ■ लंबे समय तक लंबितता:

- 31 जनवरी 2023 तक FTSCs में 2.43 लाख से अधिक POCSO मामले लंबित हैं।
  - अनुमानों से पता चलता है कि अरुणाचल प्रदेश, दिल्ली, बिहार, पश्चिमी बंगाल, उत्तर प्रदेश और मेघालय जैसे राज्यों में बैकलॉग/लंबित मामलों के नपिटान में कई दशकों का समय लगेगा।
  - वभिन्न राज्यों में अनुमानति परीक्षण अवधि भिन्न होती है, यह 21 से 30 वर्ष तक की हो सकती है।

### ■ दोषसिद्धिदर संबंधी चुनौतियाँ:

- एक वर्ष के भीतर परीक्षण पूरा करने का लक्ष्य रखने के बावजूद शोधों से पता चलता है कि दोषसिद्धिदर काफी कम है।
  - वचिराधीन 2,68,038 मामलों में से केवल 8,909 में दोषसिद्धि की जा सकी है, इसे लेकर FTSC की प्रभावकारिता को लेकर चिंताएँ बढ़ गई हैं।

### ■ सीमति कषेत्राधिकार:

- इन न्यायालयों की स्थापना एक विशेष कषेत्राधिकार के साथ की जाती है, जो संबंधित मामलों के नपिटान की उनकी क्षमता को सीमति कर सकती है। इससे न्याय वतिरण में देरी हो सकती है तथा कानूनों के कार्यान्वयन में स्थिरता की कमी हो सकती है।
  - एक आदर्श स्थिति में इन विशेष न्यायालयों में मामलों का नपिटान एक वर्ष के भीतर किया जाना आवश्यक है। हालाँकि **2023 तक दिल्ली के FTSC में कुल 4,369 लंबित मामलों में से केवल 1,049 मामलों का ही नपिटान किया गया था**। यह मामलों के नपिटान संबंधी लक्ष्य के पूरा होने में वलिंबता को इंगति करता है।

### ■ न्यायाधीशों की रक्तिर्यि और प्रशक्तिषण का अभाव:

- न्यायाधीशों की रक्तिर्यि और प्रशक्तिषण का अभाव मामलों के प्रभावी नपिटान क्षमता को प्रभावति करता है।
  - वर्ष 2022 तक पूरे भारत में नचिली न्यायालयों में रक्तिर्यिदर 23% थी।
  - सामान्य न्यायालयों के नयिमति न्यायाधीशों को अकसर FTSC में कार्य करने के लयि प्रतनियुक्ति किया जाता है।
  - हालाँकि इन न्यायालयों को मामलों के शीघर और प्रभावी नपिटान के लयि विशेष प्रशक्तिषण वाले न्यायाधीशों की आवश्यकता होती है।

### ■ कुछ अपराधों को अन्य अपराधों से अधिक प्राथमकिता दिया जाना:

- भारत में विशेष न्यायालयों की स्थापना सामान्यतः सरकार की न्यायकि और कार्यकारी दोनों शाखाओं द्वारा लयि गए तदर्थ नरिणयों के आधार पर की जाती है।
  - इसका अर्थ है कि अपराधों की कुछ श्रेणियों के अन्य अपराधों की तुलना में तेज़ी से नपिटान के लयि मनमाने ढंग से प्राथमकिता दी जाती है।

## महिला एवं बाल दुर्व्यवहार को रोकने के लिये क्या पहलें हैं?

- [बाल दुर्व्यवहार रोकथाम और जाँच इकाई](#)
- [बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ](#)
- [कशोर न्याय \(बच्चों की देखभाल और संरक्षण\) अधिनियम, 2015](#)
- [बाल विवाह प्रतिबंध अधिनियम \(2006\)](#)
- [बाल शर्म निषेध एवं वनियमन अधिनियम, 2016](#)

## आगे की राह

- सुचारु और कुशल संचालन सुनिश्चित करने के लिये FTSCs को कोर्ट रूम, सहायक कर्मचारी और आधुनिक तकनीक सहित पर्याप्त बुनियादी ढाँचा प्रदान किया जाना चाहिये।
- इन वशिष्ट न्यायालयों की स्थापना और रखरखाव के लिये अतिरिक्त धन आवंटित किया जाना चाहिये।
- नपिटान दर को बढ़ाने के लिये **FTSCs को सख्त मामला प्रबंधन, स्थगन के कारण होने वाली अनावश्यक देरी को कम** करने और साक्ष्य की समय पर प्रस्तुति सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिये।
- यह न्यायाधीशों और सहायक कर्मचारियों के लिये विशेष प्रशिक्षण प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने तथा कार्यवाही की गति बढ़ाने में मदद कर सकता है।
- रक्तियों को तुरंत भरने के प्रयास किये जाने चाहिये और यह सुनिश्चित किया जाना चाहिये कि प्रासंगिक विशेषज्ञता वाले न्यायाधीशों को इन अदालतों में नियुक्त किया जाए।

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

**[?/?/?/?/?]:**

प्रश्न. हम देश में महिलाओं के खिलाफ यौन हिंसा के बढ़ते मामले देख रहे हैं। इसके खिलाफ मौजूदा कानूनी प्रावधानों के बावजूद ऐसी घटनाओं की संख्या बढ़ रही है। इस खतरे से निपटने के लिये कुछ नवीन उपाय सुझाइये। (2014)